## [ 28 ]

देशिक्षुन्दे। ग्राह्मग्रह्मज्ञाचरग्रह्मलह्मग्रह्मण्याः ॥ ५० द्वा गृह्मद्वा चगृह्मद्वा प्रमुद्धा नि। योह्मिनपुर्ण मह्मिस्या नि ज्ञाद्विपविशेष प्रमि। ५०० ॥ वहं पर्योपरीवारे कलापब क्रभूयि। व्यादि का क्ष्रिक स्वा क्ष्रिक स्वा क्ष्रिक स्व विकास के कि स्व क्ष्रिक स्व विकास के कि स्व क्ष्रिक स्व विकास के कि स्व कि

\*\*\*\*\*

अणुका निष्णोऽल्पेचारोकोकंकि स्त्रिवं जुलै। निःशोकपारदे चिष्णेशोको तुकदुरे हिसी। १॥ अभीको निभयेक मेंड प्यनीकंर स्तरे न्ययोः। अ सीकम प्रियेभा से वित्र छेंड नूक मन्वये॥ २॥ श्रीलेंड नूको गतं जन्मन्यं अनुकंस स्त्रावास सि। जनरीयेवस्त्रमाने प्यस्का स्त्रूर्ण क्लाः॥ ३॥ अस्वानुकुवेर स्वनगर्धाम निक्युनः। पार्स्वेड निकानु वस्त्रांस्थान्याते

ना॰ ३